

## उन्नति » निरंतर आध्यात्मिक उन्नति के लिए कुछ छोड़ना होगा कुछ अपनाना होगा, तब ही आप लक्ष्य तक पहुंचेंगे

1.) एक हे छोड़ देना और 2.) दूसरा है धारण करना। ये दोनों शक्तियाँ हर व्यक्ति में हैं। शराब छोड़ना, सिगरेट छोड़ना, मांस आदि खाना छोड़ना इत्यादि छोड़ना सब लोग जानते हैं। कई बार अच्छी चीज भी किसी को अच्छी नहीं लगती तो वो उसको भी छोड़ देता है। किसी के कहने पर भी वह

अपना रहे हैं और जिसको अपनाना चाहिए उसको छोड़ रहे हैं। शक्तियों का गलत इस्तेमाल कर रहे हैं। बाबा ने कहा है कि दैवीगुणों को धारण करना है, इनको छोड़ना नहीं है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, आलस्य, अलबेलापन, ईर्ष्या और द्वेष को त्यागना है, इनको धारण नहीं

इनका सदुपयोग अवश्य करना चाहिए। 3.) लाज करने की अथवा लज्जा करने की शक्ति अर्थात् संकोच करने की शक्ति। बुराई करने के लिए हमें लज्जा आनी चाहिए। कोई व्यक्ति भेदे तरीके से हँस रहा है, बात कर रहा है अथवा हाव-भाव प्रकट कर रहा है तो ऐसे व्यक्ति को देख लोग कहते

करता है, सीट के लिए झगड़ता है तो क्या मैं भी वैसे कर सकता हूँ? वो तो ब्रह्माकुमार है नहीं। मैं बड़े-ते-बड़े बाप शिव बाबा और ब्रह्मा बाप की सन्तान हूँ, ईश्वरीय कुल का हूँ और देवता धर्म का हूँ। मैं एक आध्यात्मिक संस्था का प्रतिनिधित्व कर रहा हूँ। अगर मैं गलत व्यवहार करूँ तो लोग क्या कहेंगे! तो इस समय हमें लज्जा करने की शक्ति को यूज करना चाहिए। मुझे तो अपने बाह्यण कुल-मर्यादा और ईश्वरीय लोक-लाज में रहना चाहिए। इसीलिए बाबा कई बार कहा करते थे, इस बूढ़े बाप की दाढ़ी की लाज तो रखो। कोई भी बच्चा गलत काम करता है तो समाज में क्या कहते हैं? इसका बाप कौन है? इसको कोई तमीज नहीं सिखायी है क्या? इस प्रकार, बच्चों के गलत व्यवहार के साथ माँ-बाप की भी इज्जत चली जाती है। इसलिए गलत काम, बुरा काम करते समय हमें लज्जा आनी चाहिए अर्थात् हमें लज्जा करने की शक्ति को यूज करना चाहिए।

4.) प्रयोग करने की शक्ति। कई बार हम दूसरों को भी कहते हैं कि यह करके तो देखो, इसको आप प्रयोग में लाकर तो देखो। कोई भी कर्म हम करते हैं तो पहले देखते हैं कि यह कर्म करके किसी ने सफलता पायी है, तो हम भी उसको करना चाहते हैं। अगर किसी ने किया भी न हो, तो उसका प्रयोग करके हम देखते हैं कि इसमें क्या बुराई है, क्या भलाई है। पहले हम उसको छोटे स्तर पर प्रयोग करते हैं। मनुष्य का सहज स्वभाव है प्रयोग करने का। अगर प्रयोग में सफलता मिली तो उसको खुशी होती है, उसको बल मिलता है, उसकी अन्य शक्तियों का विकास भी होता है और चार लोगों को बताता है, समझाता है और उनको भी प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहन देता है।



ब.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

आप योग में बैठते हैं तो आप कहते हैं कि आज हमें बहुत आनन्द आया, बाबा ने हमारी झोली भर दी, आत्मा तुस हो गयी। बाबा कहते हैं, बच्चे, जो किया उसका प्रयोग करो। समझो, आपने क्लास हॉल में बर्फ लाकर रखी है, उसके ऊपर कुछ ढक दिया है ताकि वो किसी को दिखायी न पड़े। उसके पास कोई बैठेगा तो उसको लगेगा कि इस तरफ से मुझे ठंडक आ रही है, दूसरी तरफ तो है नहीं। पता नहीं, इधर क्या है! इसका अर्थ है, जो भी वस्तु है वह अपने अस्तित्व को दिखाती है। अपना प्रभाव तो डालेगी ना। अगर कमरे में अगरबत्ती जलायी है तो वो अपनी ख़शबू तो फैलायेगी ना। उसी प्रकार, अगर आपको योग में शान्ति मिली, आनन्द मिला, शक्तियों का खज़ाना मिला तो उसका प्रभाव और अस्तित्व दूसरों को पता तो होना चाहिए ना! आप अपनी योग की स्थिति को ऐसी बनाओ जैसे आपसे रेडियेशन अथवा विकीर्ण प्रवाहित हो रहा है। जैसे रेडियो का अनुभव हो रहा है। लोग पूछें कि बात क्या है? हमें भी उसका राज बता दो, हमें भी वह कला सिखा दो। इसलिए बाबा कहते हैं, बच्चे, इस ज्ञान का, योग का प्रयोग करो। तब मेरे और आपके भक्त आपको ढूंढते आयेंगे कि हमें भी रास्ता बताओ।

# स्व-उन्नति के लिए कुछ छोड़ें,



उस अच्छी चीज को स्वीकारता नहीं। क्योंकि वह चीज उसको ख़राब लग रही है। इसी प्रकार, हमको ख़राब चीजों को, ईश्वरीय जीवन में बाधा डालने वाली चीजों को छोड़ना है, त्यागना है और अच्छी चीजों अर्थात् सदगुणों और शक्तियों को धारण करना है। लेकिन आज लोग जिसको छोड़ना चाहिए उसको

करना है। जैसे हमें अटैचमेंट को छोड़ना है और डिटैचमेंट को धारण करना है। वस्तु, व्यक्ति और वैभवों का मोह त्यागना है और शरीर से भिन्न होने का, विदेही बनने का अभ्यास धारण करना है। शरीर की मोह-ममता अर्थात् देह-अभिमान को छोड़ना है और आत्म-अभिमान को धारण करना है। ये सब मौलिक शक्तियाँ हैं, हमें

हैं, अरे तुम अपने कुल की लाज तो रखो। इसी तरह बाबा कहते हैं, बच्चे, अपनी लौकिक कुल-मर्यादायें और लोक-लाज को त्यागो और ईश्वरीय कुल-मर्यादायें और दैवी-लाज करो और रखो। उदाहरण के तौर पर मैं ब्रह्माकुमार हूँ, बैज लगाये हुए हूँ, सफ़ेद कपड़े पहने हुए हूँ, ट्रेन में जा रहा हूँ। कोई मेरे से गलत व्यवहार



मुम्बई-थाने (लाइट हाउस)। एकनाथ शिंदे, कैबिनेट मिनिस्टर, महा. एवं शिव सेना लीडर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु. सरला बहन।



दिल्ली-खेडा कलां। नरेला केन्द्र के पूर्व विधायक नीलदमन खत्री को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शुभ्रा बहन।



भूसावर-भरतपुर (राज.)। उपखण्ड अधिकारी मुनिदेव यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गीता बहन।



नई दिल्ली। केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री, भारत सरकार डॉ. भागवत किशनराव कराड को उनके दिल्ली स्थित निवास स्थान पर रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन। इस मौके पर ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके तथा ब्र.कु. पंकी बहन उपस्थित रहे।



टूंडला-जीवनी नगर (उ.प्र.)। एस.डी.एम. श्रीमति बृशरा बानो को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शालू बहन।



मुम्बई-सांताक्रूज़ वेस्ट। प्रसिद्ध फिल्म निर्माता रकेश ओम प्रकाश मेहरा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. विनीता बहन।



आगरा-नवपुरा (उ.प्र.)। शिवकुमार जी, चौकी प्रभारी, बमरौली कटारा, आगरा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शशी बहन।



व्यारा-गुज.। डोलवन तालुका के पी.एस.आई. वी.आर. वसावा को रक्षासूत्र बांधने से पूर्व आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. मनीषा बहन।